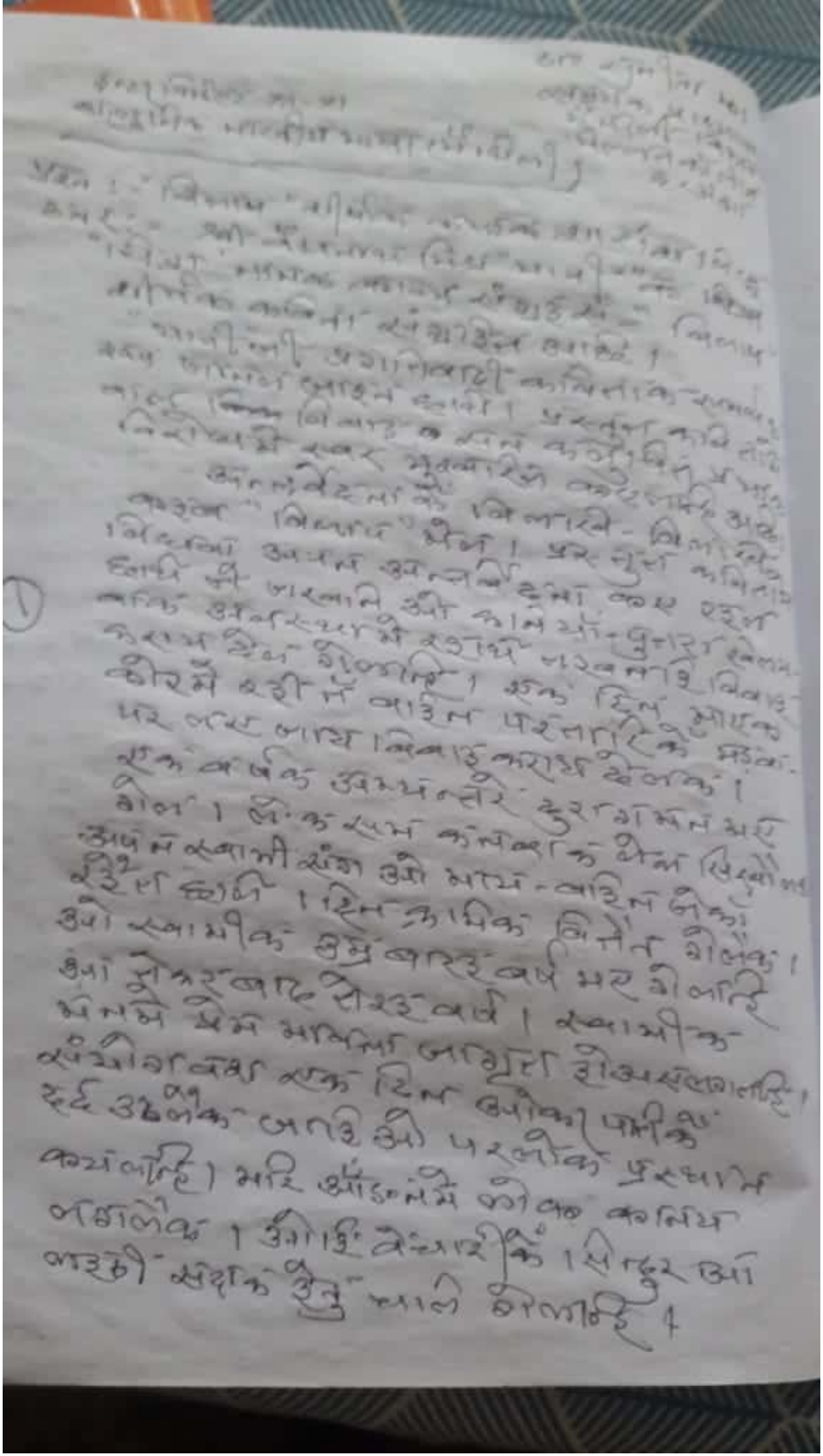

एहि दुर्दिन मे केओ अपन नहि बुझाइक।
आब ओ कामय जागय तँ चुपो करओनिहा
केओ नहि रहैक। रुसय तँ बाँसि निहारतक
केओ नहि रहैक। समाज ओकरा अधलाह
आ अशुभ बुझय लागल।

ओ विधवा धर्मसँ जीवन व्यतीत
करए चाहैत अछि, अपन इज्जतिक रक्षा
करबाक इच्छुक रहैत अछि, परञ्च ठढ़का
चानन आ ठोप बला समाजक मध्य प्रतिष्ठित
अपनाकेँ कहबा बला लोक सभ ओकर
इज्जत-आबरूपर आघात करए चाहैत
अछि। ओकर जीवन कुकुर-बिलाड़िक
जीवनसँ हीन बुझा रहल छैक। ओ
सोचि रहल अछि जे समाजमे असंख्य
विधवा एहि रूपक जीवन व्यतीत कऽ
रहल अछि। एहि प्रकारक देश ओकर
नोरक ~~[illegible]~~ धारामेडूबि जाओ, लोक-
वेद भसिया जाओ। एहन जातिपर वज्र
सरपै, धसना खसौ -

"अगरादी लागौ बरु वज्र खसौ
एहन जातिपर बरु धसना खसौ।
भूकम्प होउक बरु फटौ धरती-
माँ मिथिला रहिए कए की करती।"

एतय ~~[illegible]~~ प्रगतिवादी कवि "यात्री"
बाल-विवाह सनक दर्दनाक कुरीतिक
मुखर स्वरमे कविताक रूपमे अपन
आक्रोश व्यक्त कए लन्हि अछि।

7.8.2020